फरीदाबाद
मजदूर समाचार
मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 141 मार्च 2000

माहौल ऐसा ही है इसलिये (7)

हम हर समय बहुत परेशान रहते हैं। ऐसे में अतिरिक्त परेशान किये जाने पर हमारे मुँह से निकलता है : " नहीं करेंगे नौकरी ", " दे दें हिसाब", " उचित हिसाब पर सब नौकरी छोड़ देंगे "। वर्तमान में मजदूरी करने की मजबूरी का सोचा-समझा विरोध नहीं होता यह। बल्कि, ऐसे भाव हमारी बौखलाहट को ही अभिव्यक्त करते हैं। थोड़ा-सा आगा-पीछा देखते ही हमारी भावनायें और व्यवहार हमें अजीबोगरीब गुत्थियों में जकड़ते हैं।

पँगे लेना जाल बिछाना है

मैनेजमेन्टें जानती हैं कि परेशानियों से घिरे मजदूरों के लिये अतिरिक्त परेशानियाँ खड़ी करो तो उनमें उनसे तत्काल छुटकारा पाने की भावनायें पैदा होती हैं। इसलिये मजदूरों पर जब कोई बड़ा हमला करना होता है तब उसके लिये जाल बिछाने के वास्ते मैनेजमेन्टें बात-बात में पँगे लेना शुरु करती हैं। ऐसे प्रकट किया जाता है कि मजदूरों की सहमति की अथवा मजदूरों के असन्तोष की मैनेजमेन्ट को कोई परवाह नहीं है।

फाँसना , टारगेट बनाना

नई परेशानियों से तिलमिलाते समय भी मजदूर जानते हैं कि नये-पुराने सब लीडर मैनेजमेन्ट के पट्ठे हैं। लेकिन क्या करें ?

और फिर, मौजूदा लीडर अथवा पुराने लीडर या फिर लीडर बनने को आतुर लोग तथा उनके दादा-चमचे बहुत ही सक्रिय हो जाते हैं। मैनेजमेन्टों के लीडरी विभागों का गठन करते यह लोग मजदूरों के बीच से दस-बारह प्रतिशत को अपने में समेटे होते हैं। शातिरपने में कभी सब लीडर एक हो जाने का नाटक करते हैं तो कभी एक-दूसरे के जानी दुश्मन होने का ढोंग रचते हैं। फूट अथवा एकता का जो भी राग यह अलापते हों, मकसद होता है मजदूरों को हमले के लिये टारगेट में बदल देना।

माहौल ऐसा ही है। इसलिये ....

तत्काल माने जाल

मैनेजमेन्टों द्वारा पँगे लेने का सिलसिला मजदूरों पर बड़े हमले की तैयारी का पक्का सबूत होता है। जगह-जगह का और बार-बार का अनुभव है कि अतिरिक्त परेशानियों से तत्काल छुटकारे की हमारी भावनायें हमें फँसाने का एक जरिया बनती हैं। कोई बिल्ली के गले में घन्टी बाँधे की हमारी चाहत हमारी बरबादी का सामान बनती है।

जानते हैं फिर भी तत्काल के चक्कर में आधे-अधुरे मन से हम किसी न किसी लीडरी गिरोह के जाल में फँस जाते हैं। जबकि , मैनेजमेन्ट के पँगों के सिलसिले पर हमारे लिये अधिक सतर्कता से हर प्रकार की लीडरी से दूरी बढाना पहली जरूरत बन जाती है।

बड़े हमलों के लिये मैनेजमेन्टें खास की , विशेष की , घटना की रचना करती हैं। हमारे दैनिक , रुटीन , सामान्य विरोध के कदम मैनेजमेन्टों के बड़े हमलों की भी कारगर काट लिये हैं। हर रोज की जलालत के खिलाफ मजदूरों द्वारा स्वयं उठाये जाते सामान्य कदम मैनेजमेन्टों की , इस माहौल की , वर्तमान की जड़ों पर चोट तो करते हैं ही। (जारी)

अनुभव-चिन्तन-विचार

सुमिति इंजिनियरिंग मजदूर : "यह **ए.सी. ऑटो** के अन्दर ही एक और कम्पनी है। हमें 1200-1300 रुपये महीना वेतन देते हैं तथा पुराने वरकरों को जब चाहें निकाल देते हैं। ऐसे में एक यूनियन का झण्डा फैक्ट्री गेट पर लगा तो पहले तो हम में से 35 को निकाल दिया गया और फिर यह सँख्या बढा कर 55-60 कर दी गई। यूनियन और मैनेजमेन्ट ने आपस में मेल कर लिया। हमें सिवाय नुकसान के कुछ नहीं मिला।"

घिसा-पिटा वरकर : "मैं 7 फैक्ट्रियों में काम कर चुका हूँ और एक में मैं कई साल लीडरी में भी रहा हूँ। विरोध करने वाले मजदूर की फैक्ट्री में हम ठुकाई करवा देते थे पर श्रम विभाग में हम कुछ नहीं कर सके और यूनियन के बड़े लीडरों से मदद की बजाय हमें परेशानियाँ ही मिली। हैदराबाद एस्बेसटोस में लीडरों को निकाला तब हम विरोध में जलूस ले कर गये थे पर खुद के ठोकर लगी तब समझ में आया कि फैक्ट्री के हम लीडरों की नौकरी कभी भी जा सकती है। लीडरी तो फँसने व फँसाने के अलावा और कुछ नहीं है।"

उमड़-घुमड़

उज्जवल भविष्य की चाह में हम फँसते जाते हैं
सब कुछ जब लुट जाता है तब बात समझ पाते हैं

आशावादी होना ये अपना स्वभाव है
क्योंकि अपने जीवन में बचपन से अभाव है
ऐसे में अपने दिल को कामों में बहलाते हैं

माहौल आज का ऐसा है
ईमान धर्म सब पैसा है
और पैसों की खातिर मानवता को ठुकराते हैं

आगे बढने की होड़ लगी है
मेहनत भी जी तोड़ लगी है
लेकिन फिर भी अपना जीवन सदियों पीछे पाते हैं

विलास उसी को कहते हैं जिसमें सुखों का सार हो
और वही हमारा पिछड़ापन है जिसमें दुख अपार हों
जबकि आज यहाँ सब पैदा हो के पछताते हैं

सदियों जीने की अभिलाषा
और चिर यौवन की उस पर आशा
बस इसी को पूरा करने में हम रातोंदिन पिस जाते हैं

कहीं कम्पनियों में कहीं खानों में
कहीं आँधी में कहीं तूफानों में
अपने भविष्य की खातिर वर्तमान में ही मर जाते हैं

वर्तमान में इतनी रफ्तार हो गयी है
मौत हँस रही है जिन्दगी रो रही है
धीरे चलो आराम करो तन को क्यों तड़पाते हैं

योग्य व्यक्ति के पीछे जाना
और फिर औंधे मुँह की खाना .
अपनी इस दिनचर्या से आओ पिण्ड छुड़ाते हैं

सच्चा सुख अधिकार है अपना
बाकी सब है टूटा सपना
छोड़ो इस जग की माया यहाँ के लोग सताते हैं
उज्जवल भविष्य की चाह में अब काम पे नहीं जाते हैं।

— अजय , 15 फरवरी को रात की ड्युटी में

व्हर्लपूल मजदूर : " मैनेजमेन्टें नई-नई मशीनें ला कर मजदूरों को फालतू बना कर निकाल रही हैं। फिर भी कुछ लोग सवाल करते हैं: मैनेजमेन्ट द्वारा नई-नई मशीनें लाने में बुराई क्या है? यह मशीनें एक तरफ मजदूरों को सड़क पर फेंक रही हैं और दूसरी तरफ काम का बोझा बढा रही हैं। मजदूरों का इस हकीकत से सामना

(बाकी पेज तीन पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

शोषण के लिये कानून और कानून से परे शोषण

इंडिया फोरजिंग मजदूर : "पूरी फैक्ट्री में ठेकेदारी है – एक ठेकेदार ने ठेका ले कर और कई ठेकेदारों को ठेके दे रखे हैं। हम 1500- 1600 मजदूर हैं। हैल्परों को महीने की 900 रुपये तनखा ही देते हैं। ऑपरेटरों को पीस रेट पर लगा रखा है और वे अपनी रेल बनाये रखते हैं। न ई. एस.आई. है और न फण्ड। जनवरी का वेतन 18 फरवरी को जा कर दिया।"

कैजुअल वरकर : "आजकल **सिराको ऑटो** में काम करता हूँ। मैनेजमेन्ट ने हमारी तीन महीनों की तनखायें और 4 महीनों के ओवर टाइम काम के पैसे नहीं दिये हैं।"

चन्दा इन्टरप्राइजेज मजदूर : "टूल रूम और प्रेस शॉप में ही कम्पनी के मजदूर हैं, बाकी सब जगह ठेकेदारी है। पाँच- छह ठेकेदार हैं और वरकरों को महीने का वेतन 1000- 1200 रुपये ही देते हैं। न ई.एस.आई. है और न फण्ड। तनखा 7 से पहले नहीं देते, 25- 26 तारीख तक देते हैं।" मजदूरों को बुला कर साहब इस्तीफों के लिये दबाव डाल रहे हैं और इस प्रकार 25- 30 को निकाल दिया है। हितकारी पोट्रीज तो मैनेजमेन्ट ने खोली ही नहीं है और न वहाँ के मजदूरों को हिसाब ही दिया है।"

आटोपिन वरकर : "दिसम्बर व जनवरी की तनखायें आज 21 फरवरी तक मैनेजमेन्ट ने नहीं दी हैं। तीन- चार महीने के ओवर टाइम काम के पैसे भी बकाया हैं। नये मजदूरों की 5- 10- 15 दिन की तनखा तो मैनेजमेन्ट वैसे ही खा जाती है। ठेकेदारों के मजदूरों का तो और भी बुरा हाल है। रोज 4 घन्टे ओवर टाइम करना पड़ता है पर तनखा का यह हाल है -- दादागिरी ऊपर से।"

प्रिसीजन इंजिनियरिंग मजदूर : "रजिस्टर में सरकारी रेट पर हस्ताक्षर करवाते हैं पर पुरानों को 1400- 1500 और नयों को 1200 रुपये वेतन देते हैं। हर रोज ओवर टाइम करना पड़ता है – पेमेन्ट सिंगल रेट से है। न ई.एस.आई., न फण्ड।" बैठना पड़ता है तब की हमारी पूरी दिहाड़ी काट लेते हैं।"

जैन डाई कास्टिंग मजदूर : "मैनेजमेन्ट ने दिसम्बर व जनवरी की तनखायें आज 17 फरवरी तक नहीं दी हैं।"

नैपको बैवलगीयर वरकर : "3 साल का बोनस बकाया है। चार साल के ओवर टाइम काम के पैसे बकाया हैं। बरसों से जो ऑपरेटर हैं उन्हें भी 1952 रुपये तनखा ही देते हैं। पे- स्लिप नहीं देते। जिनको 2100 देते हैं उन्हें डी.ए. नहीं देते।"

इन्टरनेशनल पावर कारपोरेशन मजदूर : "हैल्परों को महीने का वेतन 1000- 1200 रुपये ही देते हैं। न ई.एस.आई. है और न फण्ड।"

ओरियन्ट स्टील वरकर : "कैजुअलों को महीने के 1250 रुपये ही देते हैं। चोट लगने पर कुछ देर बैठा देते हैं अथवा घर भेज देते हैं।"

ए.पी. इंजिनियरिंग वर्क्स मजदूर : "सैक्टर 24 के प्लॉट 80- 81 में 300 में से 50 मजदूर ही परमानेन्ट हैं। रजिस्टर में 1900 पर दस्तखत करवाते हैं पर देते 1200 रुपये महीना ही हैं। तनखा 7 के बाद ही देते हैं। गाली- गलौच और बदतमीजी थोक में करते हैं। घर में किसी की मौत हो जाये तब भी एडवान्स नहीं देते। जिसे निकाल देते हैं उसके प्रोविडेन्ट फण्ड फार्म पर हस्ताक्षर करने से मना कर देते हैं।"

मैनेजमेन्टों की लगाम

हर कार्यस्थल पर हजारों तार होते हैं; हजारों नट- बोल्ट होते हैं; नालियाँ- सीवर होते हैं; कई- कई ऑपरेशन होते हैं; रात- दिन को लपेटे शिफ्टें होती हैं। इसलिये मैनेजमेन्टों को रोकने- डाटने के लिये मजदूरों के हाथों में कारगर लगाम हैं: ✶ पाँच साल दौड़ने वाली मशीनें छह महीनों में टें बोल दें; ✶ कच्चा माल- तेल- बिजली उत्पादन के लिये आवश्यक मात्रा से डेढी- दुगनी इस्तेमाल हो; ✶ ऑपरेशन उल्टे- पल्टे हो कर क्वालिटी को गँगा नहा दें; ✶ बिजली कभी कड़के, कभी दमके, कभी आँख- मिचौनी करने मक्का- मदीना चली जाये; ✶ अरजेन्ट मचा रखी हो तब ऐसे ब्रेक डाउन हों कि साहबों को हृदय रोग हो जायें।

बिना किसी प्रकार की झिझक के, शान्त मन से, ठन्डे दिमाग से सोच- विचार कर कदम उठाने चाहियें।

डेल्टन केबल्स वरकर : "नवम्बर, दिसम्बर और जनवरी की तनखायें आज 8 फरवरी तक नहीं दी हैं। दो बार एक- एक हजार एडवान्स करके दिये हैं। बोनस भी नहीं दिया है – मैनेजमेन्ट ने आधा- आधा करके देने की बात की और यूनियन ने मना कर दिया। वेतन देते नहीं और सख्ती इतनी कि पेशाब करने जाने के लिये भी टोकन लेना पड़ता है।"

अतुल ग्लास वरकर : "कम्पनी के अन्दर कम्पनी बना रखी है। दिसम्बर का वेतन आज 9 फरवरी तक नहीं दिया है। तनखा माँगने पर मैनेजमेन्ट ने 4 मजदूरों को सस्पेन्ड कर दिया।"

शरद मैटल मजदूर : "तनखा 1400- 1500 रुपये महीना ही देते हैं। डबल की बजाय सिंगल रेट से ओवर टाइम देते हैं और जो पैसे बनते हैं उनमें से भी 20- 25 रुपये उड़ा देते हैं।"

कैजुअल वरकर : "जब मैं **एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक** में काम करता था तब मैनेजमेन्ट रविवार को हमें काम पर बुला लेती थी लेकिन पेमेन्ट ओवर टाइम काम के रेट से नहीं करती थी। हेरा- फेरी के लिये मैनेजमेन्ट सोमवार को हमारी छुट्टी कर देती थी और कागजों में रविवार की छुट्टी दिखा देती थी।"

हितकारी चाइना मजदूर : "मैनेजमेन्ट ने जनवरी का वेतन हमें आज 16 फरवरी तक नहीं दिया – मार्च में जा कर देगी। अलग- अलग से

मैटल बॉक्स वरकर : "13 साल से फैक्ट्री बन्द है। हिसाब नहीं दिया है। जले पर नमक छिड़कने के लिये मैनेजमेन्ट रिटायर होने वालों की लिस्टें नोटिस बोर्ड पर टँगवाती रहती है।"

ब्रॉन लैबोरेट्री मजदूर : "तनखा टाइम पर नहीं देते – जनवरी का वेतन आज 17 फरवरी तक नहीं दिया है। ऊपर से चमचे हमारी परेशानियों को और बढा रहे हैं।"

फरीदाबाद फोरजिंग मजदूर : "ओवर टाइम काम के पैसे माँगते हैं तो कहते हैं गेट बाहर जाओ। हैल्परों से लेथ चलवाते हैं। जनवरी की तनखा 18 फरवरी को जा कर दी। जिन्हें निकाल देते हैं उन्हें हिसाब नहीं देते।"

ठेकेदार का वरकर : "मैनेजमेन्ट ने काफी काम **कटलर हैमर** डी एल एफ प्लान्ट में ठेकेदारों को दे दिया है जो कि न्यूनतम वेतन भी नहीं देते। चाय पीने में पाँच मिनट से ज्यादा लगता है तो ठेकेदार एक घन्टे के पैसे काट लेता है। वेतन 1800 कह कर रखा था लेकिन महीना पूरा होने पर 1400 रुपये पकड़ा दिया – 4 रविवार की छुट्टी के पैसे काट लिये। परमानेन्ट मजदूरों की किसी हलचल की वजह से हमें खाली

सुपर ऑयल सील वरकर : "दिसम्बर व जनवरी की तनखायें मैनेजमेन्ट ने आज 16 फरवरी तक हमें नहीं दी हैं। दो साल का हमारा बोनस भी बकाया हो गया है।"

नेफा एक्सपोर्ट्स मजदूर : "जनवरी का वेतन आज 15 फरवरी तक नहीं दिया है।"

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान — मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद–121001
2. प्रकाशन अवधि — मासिक
3. मुद्रक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह

मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 2000 — हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

अनुभव-चिन्तन-विचार....

(पेज एक का शेष)

है और इसे ही चर्चा में लाने की जरूरत है, न कि यह बात कि मशीनें लानी चाहियें अथवा नहीं।"

एक इंजिनियर : "ठेकेदारी बढती जा रही है। एक्सीडेन्टों में जिन मजदूरों के हाथ कट जाते हैं उन्हें बहला-फुसला-धमका कर ठेकेदार गाँव भेज देते हैं। अँग भँग मजदूरों को पेन्शन-वेन्शन कुछ नहीं मिलती क्योंकि ठेकेदार लोग ई.एस.आई. के पैसे भी जमा नहीं करते, खा जाते हैं। ठेकेदार बिचौलिये होते हैं। ठेकेदारी प्रथा को रोकने के तरीकों पर चर्चाओं की जरूरत है।"

कैनन इण्डिया मजदूर : "अब लीडर बोलते हैं कि आर-पार की लड़ाई लड़ेंगे और मैनेजमेन्ट को घुटनों के बल चलना सिखा देंगे। हमारी जनवरी की तनखा में से हफ्ते के पैसे बाहर बैठने के तथा 8 दिन के सजा के तौर पर मैनेजमेन्ट ने काटे और 50-50 रुपये लीडरों ने चन्दा लिया। सात के खिलाफ 10 फरवरी को कैमरेवाले से मार-पीट की पुलिस में रिपोर्ट दर्ज। लीडरों ने 17 फरवरी को टूल डाउन करवाया। मैनेजमेन्ट ने 10-12 वरकरों का गेट रोक दिया। लीडरों ने 18 फरवरी से बाहर की हड़ताल घोषित कर दी। तब से श्रम विभाग में तारीखें पड़ रही हैं और फैक्ट्री में ठेकेदार के 150 मजदूर काम कर रहे हैं। हम में से जिन्होंने मैनेजमेन्ट के विरोध में अगुवाई की थी उन्होंने अपने बचाव के लिये झण्डा लगवाया लेकिन मैनेजमेन्ट और यूनियन के ताने-बाने में हम सब फँस गये हैं। चमचे कहलवाओ या बलि हो के बीच चुनने की स्थिति में हमें ला खड़ा किया है।"

विंग्स ऑटो वरकर : "कुछ हासिल करने के लिये हम ने एक यूनियन का झण्डा लगाया और कैजुअलों को न्यूनतम वेतन, ई.एस.आई. व फण्ड के मुद्दों को आगे किया। मैनेजमेन्ट ने कैजुअलों को पहले ठेकेदार के मजदूरों में बदला और फिर उन सब को निकाल दिया। कैन्टीन वरकरों को उत्पादन में लगा कर कैन्टीन सहुलियतें बन्द कर दी। वार्षिक तरक्की और वर्दी-जूते-साबुन रोक लिये। महीने में तीन बार आधा-आधा किलो मिलने वाली मिठाई बन्द कर दी। नये कैजुअलों को न्यूनतम वेतन पर भर्ती कर लिया। दो परमानेन्ट को सस्पेन्ड कर दिया। यूनियन का झण्डा टाँगने से हमें फायदे की बजाय नुकसान ही हुआ। अब यूनियन लीडरों की मानें तो अपनी नौकरियाँ दाँव पर लगायें और मैनेजमेन्ट की मानें तो चमचे बनें। दूसरी यूनियन बनाने की सुगबुगाहट भी है, यानि, मजदूर स्वयं एक-दूसरे के सिर फोड़ें की साजिश चल रही है। तवे पर जलना है या चूल्हे में जलना है के बीच चुनना भी कोई चुनना है!"

मजदूर समाचार महीने में एक बार ही छाप पाते हैं और 5000 प्रतियाँ ही फ्री बाँट पाते हैं। कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें। डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद—121001

बी. आई. एफ. आर.

झालानी टूल्स मजदूर : "बीमार कम्पनियों को स्वस्थ बनाने के नाम वाले कानून के तहत सरकार ने 1987 में बी. आई. एफ. आर. बनाई। झालानी टूल्स लिमिटेड 1987 से ही बी.आई.एफ. आर. की छत्रछाया में है। कम्पनी की सम्पत्ति रफा-दफा करने, मजदूरों की तनखायें नहीं देने, मजदूरों का प्रोविडेन्ट फण्ड जमा नहीं करवाने, मजदूरों की ग्रेच्युटी की राशि जमा नहीं रखने, ई.एस.आई. के पैसे जमा नहीं करने, बिजली के बिल जमा नहीं करने के गैर-कानूनी काम मैनेजमेन्ट 13 साल से धड़ल्ले से कर रही है। केनरा बैंक, देना बैंक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, हाँग काँग बैंक, अमेरीकन एक्सप्रेस बैंक, सिन्डीकेट बैंक, इण्डस्ट्रीयल डेवलेपमेन्ट बैंक ऑफ इण्डिया के 17 करोड़ 42 लाख 77 हजार रुपये तो ब्याज के ही मैनेजमेन्ट ने नहीं दिये हैं, मूलधन की तो बात ही क्या। पता नहीं किस-किस की जेब गरम कर 1988 की स्कीम फेल होने के बाद 1992 में दूसरी स्कीम मँजूर करवाई और उसके भी फेल होने के बाद 1996 में मैनेजमेन्ट बदलने की कार्रवाई को रुकवाया तथा बे-लगाम हो कर झालानी मैनेजमेन्ट गबन-घोटाले करती रही है। फरीदाबाद प्लान्टों के मजदूरों के 40-50 करोड़ रुपये दबाये बैठी मैनेजमेन्ट ने कुण्डली प्लान्ट के वरकरों के 9 करोड़ रुपये भी दबा रखे हैं—औरंगाबाद और जालना प्लान्टों के मजदूरों के बकाया पैसों की जानकारी नहीं है। कम्पनी में उत्पादन मात्र 14 प्रतिशत हो रहा है तथा मैनेजमेन्ट और गबन के लिये सम्पत्ति बेचने की फिराक में है। आखिर... आखिर बी. आई.एफ.आर. को 21. 1. 2000 की सुनवाई के बाद मैनेजमेन्ट बदलने की कार्रवाई का आदेश देना पड़ा है और मरे साँप को गले में डालने वाले नहीं मिलने पर बैंकों के पैसों की वसूली के लिये नीलामी आदि। फरीदाबाद, औरंगाबाद और जालना प्लान्टों के मजदूरों के बकाया पैसों का तो जिक्र तक नहीं है!"

और बातें यह भी

मितासो वरकर : "मैनेजमेन्ट का पेशाब पीने को मजदूर मजबूर हैं। ऊपर स्टाफ वाले पेशाब करते हैं और नीचे वरकर पानी पीते हैं—पेशाब वाली पाइप लूज है, ऊपर से पेशाब टप-टप गिरता रहता है।"

फ्रिक इण्डिया मजदूर : "20 साल की नौकरी के बाद साढे तीन प्रतिशत की तरक्की देने का जो रिवाज है उसमें भी मैनेजमेन्ट हेरा-फेरी करती है। जो हकदार होते हैं उनमें से आधों को लटका कर वरकरों को 15 रुपये महीना का नुकसान किया जाता है।"

आयशर ट्रैक्टर वरकर : "हमें बन्धुआ मजदूर बना रखा है—टट्टी-पेशाब तक के लिये टाइम नहीं। मैनेजमेन्ट की मनमर्जी है—किसी को सहुलियत दे देती है, किसी को नहीं देती। पर हाँ, एक बात सब पर लागू की है: काम का बोझ बढाया है और सहुलियतें घटाई हैं। गुपचुप लाइन की स्पीड भी बढा देती है।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "मैनेजमेन्ट ने नव सहस्त्राब्दि की बधाई फार्मट्रैक के मजदूरों की पहली जनवरी की आधी दिहाड़ी काट कर दी है।

"एनसीलरी में मैनेजमेन्ट उन्हीं पुरानी मशीनों पर उत्पादन में भारी वृद्धि के लिये दबाव बनाये है। हम 350 कैजुअलों और 150 घन्टे ओवर टाइम के जरिये 45,000 कारब्युरेटर प्रतिमाह बनाते थे। एग्रीमेन्ट द्वारा सब कैजुअल हटा दिये, ओवर टाइम बन्द कर दिया और उत्पादन 50,000 निर्धारित कर दिया जिसे हम 167 मजदूरों को करना पड़ता है। हर समय 60 सुपरवाइजर और 26 मैनेजर हमारे सिर पर खड़े रहते हैं। टाइम स्टडी सैकेन्डों में की है और इसमें लोडिंग-अनलोडिंग व ब्रेक्स के लिये कोई समय नहीं छोड़ा है। उत्पादन पूरा नहीं होता—पैसे काटते हैं और लीडरों के कहने पर लौटा देते हैं।"

टेकमसेह मजदूर : "16 फरवरी को सुबह बल्लभगढ प्लान्ट में एक वरकर, विपिन की फोर्क लिफ्ट के साथ गड्ढे में गिरने से मृत्यु हो गई। विपिन हैल्पर था और हफ्ते-भर पहले कन्ट्रोल डिविजन से प्लानिंग डिविजन में ट्रान्सफर किया गया था। टेकमसेह मैनेजमेन्ट 600 मजदूरों की छँटनी के लिये दबाव के वास्ते वरकरों को एक प्लान्ट से दूसरे प्लान्ट, एक विभाग से दूसरे विभाग और एक जॉब से दूसरी जॉब पर ट्रान्सफर भी कर रही है। कोई मजदूर इनकार करता-करती है तो सस्पेन्ड। टेकमसेह मैनेजमेन्ट की छँटनी योजना ने विपिन की बलि ली है।"

भास्कर रिफ्रेक्ट्रीज मजदूर : "3 नम्बर ई.एस.आई. अस्पताल में भर्ती मेरी पत्नी की हालत बिगड़ने पर सुबह 11 बजे दिल्ली रेफर किया। हम ने उन्हें एम्बुलेन्स में लिटाया ही था कि एक साहब आये और ड्राइवर से बोले कि मरीज को उतारो, उन्होंने एम्बुलेन्स निजी काम के लिये ली है। ड्राइवर को घबराते देख हम ने साहब को बीमार की स्थिति बता कर हमें जाने देने की अनुनय-विनय की। हमारी एक न सुन मेरी पत्नी को एम्बुलेन्स से उतार दिया गया। दो बजे तक लॉन में गम्भीर रूप से बीमार पत्नी के साथ लाचार बैठने की पीड़ा भुगतने के बाद एम्बुलेन्स आई और मेरी पत्नी को सफदरजंग अस्पताल ले गई। दिल्ली में डॉक्टरों ने मरीज को लाने में देरी की बात कही। मेरी पत्नी की मृत्यु हो गई।"

मामला गड़बड़ है

टेकमसेह मजदूर : "600 मजदूरों को नौकरी से निकालने के लिये जाल बुन रही मैनेजमेन्ट ने 16 फरवरी को फैक्ट्री में मजदूर की मौत को हमारे लिये फन्दा बना डाला है। तीन महीने से ज्यादा समय तक कम्प्रेसर सप्लाई करने जितना उत्पादन स्टॉक कर मैनेजमेन्ट भड़काने में लगी थी। ट्रान्सफरों, निलम्बनों, ऑपरेटरों से हैल्परी करवाने, वेतन में कटौती के जरिये भड़काया। इनक्रीमेन्ट रोक कर, ग्रेड रिवाइज नहीं कर, मेडिकल का पैसा नहीं दे कर भड़काया। स्टेटर असेम्बली आदि में काम नहीं देना, माल बाहर ही बाहर मार्केट में भेज कर भड़काया। हम ने कई बार लीडरों को घेरा और घेर कर उन्हें मैनेजमेन्ट के पास ले गये। लेकिन सिर पर लटक रही छँटनी की तलवार को देख रहे मजदूर टूल डाउन के झाँसे में नहीं आये। ऐसे में 16 फरवरी को फैक्ट्री में मजदूर की मौत पर दोनों प्लान्टों में टूल डाउन मैनेजमेन्ट के लिये बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा जैसा रहा है। जानबूझ कर करवाया गया है तो और नासमझी में टूल डाउन करवाया गया है तो भी हमें फँसा दिया गया है। 16 फरवरी को आरम्भ टूल डाउन आज 3 मार्च को भी जारी है। इस बीच 20 की बजाय 8.33 प्रतिशत बोनस का नोटिस मैनेजमेन्ट ने जानबूझ कर गरमी बनाने के लिये लगाया है। नब्बे प्रतिशत मजदूर समझ रहे हैं — बिल्कुल शान्त रह कर, आपस में सोच-विचार और तालमेलों द्वारा ही हम अपनी नौकरियों पर इस भारी हमले का जवाब दे सकते हैं।"

कोको वायर वरकर : "जनवरी का वेतन आज 12 फरवरी तक नहीं दिया है — 25 तारीख के बाद जा कर देगी। मैनेजमेन्ट कहती है कि पैसा है ही नहीं — मौत होने की स्थिति में भी पैसे नहीं देती। छँटनी की तैयारी कर रही है — इस समय 450 परमानेन्ट हैं और हम में से 200 को निकालने की जुगत मैनेजमेन्ट भिड़ा रही है।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "फस्ट प्लान्ट में इस समय मैनेजमेन्ट नरमी बरत रही है लेकिन मशीनों की शिफ्टिंग जारी है और नई सी.एन.सी. मशीनें आ रही हैं। मल्टी स्किल और मल्टी मशीन मजदूरों को बड़ी सँख्या में फालतू बनायेंगी ही।

"नये लीडरों ने 200 रुपये अतिरिक्त चन्दा माँगा तो बहुत से मजदूरों ने नहीं दिया। पहली फरवरी को फार्मट्रैक में एक लीडर ने एक सेक्युरिटी गार्ड से 200 रुपये चन्दा देने को कहा तो उसने मना कर दिया और इस पर गर्मा-गर्मी हुई। दो फरवरी को मैनेजमेन्ट ने उस लीडर का गेट रोक दिया और 3 को सुबह लीडरों ने फार्मट्रैक मजदूरों को फैक्ट्री में जाने से मना कर दिया। मैनेजमेन्ट-लीडर समझौते के बाद 7 फरवरी को फार्मट्रैक मजदूर फैक्ट्री में गये।"

व्हर्लपूल मजदूर : "अभी एक लाइन पर ही ऑपेरा मॉडल का उत्पादन शुरू हुआ है। इसने डोर असेम्बली में 150, कन्डेन्सर जाली में 30-40 और क्रेटिंग-पैकिंग में 15-20 मजदूरों को सरप्लस कर दिया है। ऑपेरा तीन लाइनों पर नाचेगा तब 600-700 मजदूरों की बलि माँगेगा।"

कटलर हैमर वरकर : "मंडी में बढी होड़ के परिणामस्वरूप हुई छँटनी आदि से कटलर हैमर में मजदूरों की सँख्या 950 से घट कर 566 पर आ गई। इधर छाई मन्दी ने प्रतियोगिता को और बढा दिया है। इसलिये मैनेजमेन्ट हम में से 200-250 और को निकालने की फिराक में है। इसके लिये ट्रान्सफर, शिफ्ट परिवर्तन, निलम्बन के जरिये मैनेजमेन्ट ने माहौल बनाया और पुराने लीडरों ने 27 फरवरी से टूल डाउन करवा दी है — नये लीडर उत्पादन में लगे हैं। मैनेजमेन्ट के जाल के ताने-बाने बने नये-पुराने लीडरों पर मजदूरों को रत्ती-भर भरोसा नहीं है। लेकिन सवाल तो इस जाल को काटने का है।"

जरूरी हैं विकल्प

झण्ड है जिन्दगी

पोली मेडिक्योर लिमिटेड मजदूर : "सैक्टर-59, प्लाट नम्बर 106 में फैक्ट्री है और इसमें डिस्पोजेबल इन्जेक्शन तथा ब्लड बैग बनते हैं। यहाँ हम 150 लड़के और 70 लड़कियाँ काम करते हैं।

"गर्मी-सर्दी-बरसात पूरी कम्पनी सुबह 8 से रात 9 चलती है — लड़कों को रोज 12 घन्टे और लड़कियों को साढे नौ-साढे दस घन्टे काम करना पड़ता है। तीन महीनों से तो न कोई साप्ताहिक छुट्टी दी है और न किसी 26 जनवरी की। कहीं-कहीं तो लड़कों को रोज सुबह 9 से रात एक बजे तक काम करना पड़ता है। आँखें लाल हुई रहती हैं और उँगलियाँ कट जाती हैं। मशीन पर खड़े-खड़े झपकी आ जाती है तो नौकरी से निकाल देते हैं।

"ओवर टाइम काम के पैसे डबल की बजाय सिंगल रेट से देते हैं। मशीन आपरेटरों को भी हैल्परों का ग्रेड देते हैं।

"26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस के दिन तो हम से ड्युटी करवाई ही, इधर विधान सभा चुनाव वाली 22 फरवरी को भी हम से मैनेजमेन्ट ने काम करवाया। वैसे 19 फरवरी को नोटिस लगाया था कि 20 को, रविवार को ड्युटी रहेगी और 22 फरवरी को चुनाव की छुट्टी रहेगी लेकिन सोमवार को सब को कह दिया कि 22 को ड्युटी आना होगा। वोट डालने वाले दिन मैनेजमेन्ट ने साइकिलें फैक्ट्री के अन्दर रखवाई और गेट पर ताला लगा कर फैक्ट्री में हम लड़के-लड़कियों से काम करवाया।

"सर्दियों में भी फैक्ट्री के अन्दर स्वेटर और जुराब नहीं पहन सकते। एयर कन्डीशनर चलते हैं — ठन्ड से हमारे पैर सूज जाते हैं। जूते-चप्पल की बजाय कपड़े के पतले जूते-से पहनने होते हैं जिनमें से पैरों में सूइयाँ घुस जाती हैं।

"टैफलोन विभाग में गर्म काम है। उत्पादन कम न हो इसलिये वहाँ गर्मियों में भी पँखे नहीं चलाने देते। हमारे हाथ और कपड़े जलते रहते हैं।

"बड़ी व भारी पेटियों को दूसरी मंजिल से नीचे लाना और गेट पर ट्रकों में चढाना पड़ता है। ऊपर से उतरते समय गिर जाने पर कहते हैं कि नखरे मत करो कोई चोट नहीं लगी।

"वर्दी ऐसी है कि घुटन होती है — आँखें ही आँखें दीखती हैं। घुटन से 21 फरवरी को दो लड़कियाँ बेहोश हो गई।

"प्रोडक्शन के लिये बहुत झिक-झिक करते हैं — तमीज से बात तो करते ही नहीं। हर घन्टे की प्रोडक्शन लिखवानी पड़ती है — कम हुई तो डाँट पड़ती है और अगले घन्टे में ज्यादा उत्पादन करना पड़ता है। प्रोडक्शन बढाने के लिये 10 रुपये का लालच भी देते हैं। उत्पादन के चक्कर में ब्लेड से हाथ कट जाते हैं और सूइयाँ उँगलियों में धँस जाती हैं।

"लन्च से पहले पानी पीने नहीं जा सकते। लन्च के बाद भी एक बार ही पानी पीने जाने देते हैं पर तब भी रजिस्टर में इन्ट्री करके, लिख कर जाना होता है।

"डिपार्टमेन्टों में कैमरे लगा रखे हैं।

"कैन्टीन नहीं है। लन्च के समय भी फैक्ट्री से बाहर नहीं जा सकते। अगर किसी दिन खाना बना कर नहीं ले जा सके तो भी गेट पास नहीं देते और भूखा रहना पड़ता है। हाँ, जिस दिन रात को एक बजे तक काम करवाते हैं उस दिन मैनेजमेन्ट खुद बाहर से रात का खाना मँगवा कर देती है।

"घर में कोई बीमार हो तब भी छुट्टी नहीं देते। हम खुद छुट्टी कर लें तो नौकरी से निकाल देते हैं। फैक्ट्री में जब काम नहीं होता तब वापस कर देते हैं और उस दिन के कोई पैसे नहीं देते। जब चाहें तब नौकरी से निकाल देते हैं। कोई लड़का-लड़की को बात करते देख लिये तो दोनों को नौकरी से निकाल देते हैं।

"रीजोइनिंग यहाँ एक अजीब चीज है। फैक्ट्री में 6 महीने ई.एस.आई. व फण्ड काटते हैं और फिर 3 महीने इनके पैसे नहीं काटते। इन तीन महीने भी मजदूर फैक्ट्री में काम करती-करता है और तनखा देते हैं — फण्ड व ई. एस. आई. नहीं काटने के कारण पैसे कुछ ज्यादा ही मिलते हैं पर इस दौरान फैक्ट्री के कागजों में वे मजदूर होते ही नहीं हैं! इन तीन महीनों के बाद नये सिरे से फार्म भरवा कर फिर ई.एस.आई. व फण्ड काटना शुरू कर देते हैं। चार साल से लगातार काम कर रहे मजदूर इस प्रकार की 6 रीजोइनिंग से गुजर चुके हैं।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए
जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।